6 पर्यायाः एवम् विपर्ययाः

1 पर्यायाः

समान अर्थ को बताने वाले सभी शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। पूरे संसार में संस्कृत ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसके विशाल शब्द भंडार में एक ही शब्द के सौ से भी अधिक पर्यायवाची शब्द मिल सकते हैं। एक पद के प्रायः सभी पर्यायवाची पदों के लिंग समान होते हैं तथा उनके साथ उपपद विभक्ति के नियमों का प्रयोग भी समान रूप से किया जाना चाहिए। कभी-कभी लिंग अलग भी हो सकते हैं; यथा–'उद्यानम्' तथा 'उपवनम्' नपुंसकलिंग पद हैं तथा उन्हीं का पर्याय पद 'वाटिका' स्त्रीलिंग पद है। कुछ शब्दों के पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित हैं :

1. आशु = शीघ्रम्, अचिरम्
2. ईश्वरः = स्वामी
3. वरः = श्रेष्ठः
4. लब्ध्वा = प्राप्त्वा, प्राप्य
5. कर्त्तव्यम् = करणीयम्
6. छात्रः = शिक्षार्थी, विद्यार्थी
7. समयः = कालः
8. अस्ति = वर्तते
9. सज्जः = तत्परः
10. रत्नाकरः = जलधिः, सागरः
11. सोमः = चन्द्रः, इन्दुः
12. तारिका = तिथिः
13. साधुः = सज्जनः
14. लोचनम् = अक्षिः
15. पर्णम् = पत्रम्
16. पाषाणम् = अश्मः
17. अन्तरम् = कालांशः
18. सौचिकः = सीवकः
19. व्याधः = आखेटकः
20. महानसम् = रसवती
21. शूकरः = वराहः
22. शिखण्डी = मयूरः
23. वल्लरी = लता
24. नितराम् = निरन्तरम्, सततम्
25. पूज्यः = वन्द्यः
26. मुकुटम् = किरीटम्
27. वृक्षः = महीरुहः
28. खलः = दुष्टः
29. उन्नतिः = प्रगतिः
30. पूतम् = पवित्रम्
31. सकलः = सर्वः
32. एवम् = इत्थम्
33. वत्सः = पुत्रः
34. वीथिः = रथ्या
35. चेष्टा = प्रयत्नः, प्रयासः
36. पटुः = चतुरः, दक्षः, प्रवीणः, कुशलः
37. तिमिरः = अंधकारः
38. नापितः = भाण्डिकः
39. भालम् = ललाटम्, मस्तकम्
40. पुत्रवधूः = स्नुषा
41. प्रपातः = निर्झरः, वारिप्रवाहः
42. विमलम् = स्वच्छम्, निर्मलम्
43. कार्षः = कृषकः
44. कुटुम्बम् = कुटुम्बकम्, परिवारः
45. वक्रः = कुटिलः
46. केशप्रसाधनी = केशमार्जकम्
47. भिक्षुः = भिक्षाकः, भिक्षुकः
48. ख्यातिः = कीर्तिः, प्रसिद्धिः
49. वह्निः = अग्निः, अनलः
50. सुरभिः = सुगन्धः, सुवासः
51. जलम् = उदकम्, सलिलम्

विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विपर्यय कहलाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1. पक्षः	=	विपक्षः	8. राज्ञी	=	चेटी	15. इच्छा	=	
2. गत्वा	=	आगत्य	9. अभिनवः	=	पुरातनः	16. सुलभः	=	
3. क्रयम्	=	विक्रयम्	10. मंगलम्	=	अमंगलम्	17. प्रभूतम्	=	
4. सत्यम्	=	असत्यम्	11. प्रसन्नः	=	अप्रसन्नः	18. पक्षः	=	
5. ज्ञानम्	=	अज्ञानम्	12. जयः	=	पराजयः	19. खाद्यम्	=	
6. पूर्णः	=	अपूर्णः	13. प्रतिदिनम्	=	यदा-कदा	20. कर्मशीलः	=	
7. शुभम्	=	अशुभम्	14. खलः	=	साधुः			

ध्यातव्यम्

- पर्याय अथवा विपर्यय पदों में समान विभक्ति होनी चाहिए। यदि नृपस्य पद है तो पर्याय राज्ञः होना चाहिए।
- कभी-कभी समानार्थी पदों का लिंग भिन्न-भिन्न भी हो जाता है।
- बिना पद बनाए पर्याय या विपर्यय का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- एक जैसे लगने वाले पदों के अर्थों पर विशेष रूप से ध्यान दें।
- वृक्ष के सभी पर्याय प्रायः पुल्लिंग में होते हैं; यथा—द्रुमः, वृक्षः, तरुः आदि।
- पुष्प एवं फल के पर्याय प्रायः नपुंसकलिंग में होते हैं; यथा—पुष्पम्, सुमनम्, कमलम्, जलजम्।
- आम्रः का अर्थ होगा—आम का वृक्ष एवं आम्रम् का अर्थ होगा—आम का फल।
- कमलम्, पंकजम्, जलजम्, नीरजम् सभी नपुंसकलिंग के पद हैं।
- वारिधिः जल को धारण करने वाला समुद्र का पर्याय है, जबकि वारिदः जल को देने वाला घन का पर्यायवाची है।
- द्विजः का अर्थ है—दो बार जन्म लेने वाला। यह पक्षी का पर्याय है, क्योंकि पक्षी का जन्म अंडे से दुबारा होता है। साथ ही यह ब्राह्मण का पर्याय भी है, क्योंकि 'उपनयन' संस्कार होने पर उसका पुनः जन्म माना जाता है।
- अनलः का अर्थ है—अग्नि तथा अनिलः का अर्थ है—पवन। अतएव एक से लगने वाले शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए।